PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 4, ISSUE I

आधुनिक जीवन, सतत विकास के परिपेक्ष्य में पर्यावरण से संरक्षण एक अध्ययन

डॉ. प्रवीन कुमार त्रिपाठी
सहा0 आचार्य शिक्षाशास्त्र,
रामनिवास महाविद्यालय, चित्रकूट गॉधी, फर्रूखाबाद।
उत्तर प्रदेश भारत

ग्लोवल वार्मिंग के कारण ग्लेशियर पिघलने लगे एवं वनों की अत्यधिक कटाई से नदियों में बाढ़ आ रही है। समुद्र का जलस्तर सन् १९९० की तुलना में सन् २०११ में १०-२० सेंटीमीटर उठ गया जिसके फलस्वरूप तटीय इलाकों से मैंग्रोव के जंगल नष्ट हो रहे हैं। प्रतिवर्ष समुद्र के करोड़ों टन कूड़े-कचरे एवं खर-पतवार के पहुँचने से विश्व की लगभग १/४ मूँगे की चट्टान नष्ट हो चुकी हैं। इस कारणवश समुद्री खाद्य प्रणाली प्रभावित होने से पारिस्थितिक-तंत्र संकट में पड गया है।

विकास और विनाश की धारायें एक साथ चलें-कभी समानांतर और कभी एक दूसरे को काटती हुई तो भला किसको आश्चर्य नहीं होगा। आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण यानि प्रकृति में जो मौजूदा समय में हमारे चारों ओर परिलक्षित होता है-वायु,जल,मृदा, पेड़-पौधे, प्राणी आदि सभी पर्यावरण के अंग हैं और इन्हीं से पर्यावरण की रचना भी होती है इसीलिए सभी प्रकार के जीव और भौतिक तत्व अपनी क्रियाओं से एक दूसरे को प्रभावित भी करते हैं।

आज के प्रगतिशील युग में मानव के आधुनिक जीवन के पग-पग को अन्य समुदाय, समाज एवं दूसरे अन्य राष्ट्रों पर अंतर-निर्भर कर दिया है। जनसंख्या व औद्योगिकीकरण के कारण तकनीकी सभ्यता के द्वारा वैभव और ऐश्वर्य प्राप्त करने में चाहें अस्थायी रूप से हम आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में सफल क्यों न हो जाए परन्तु हमारा स्थायी विकास संदिग्ध ही रहेगा क्योंकि पारिस्थितिकी व्यवस्था में असुंतलन द्रुतगति से हो रहा है। कालान्तर में भी यदि मानव की यही अभिवृत्ति बनी रही तो प्रकृति द्वारा करोंड़ों वर्षों की यात्रा के उपरांत बना हमारा प्राकृतिक वातावरण नष्ट हो जाएगा।

प्रदूषण एक ऐसा अभिशाप है जो विज्ञान की कोख से जन्मा है और जिसे सहने के लिए अधिकांश जनता मजबूर है। प्रदूषण से तात्पर्य प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा, न शुद्व वायु मिलना, न शांत वातावरण मिलना। ''मैन मेड ईको सिस्टम'' में मानव अपने अस्तित्व को उस समय खतरे में डाल देगा जब तीव्र गति से हो रहे जल, नभ, थल, वायु, ध्वनि, रेडियोधर्मी आदि के प्रदूषण से बढ़ते-बढ़ते ऐसी परिस्थितियॉ उत्पन्न हो जाएगीं कि मानव को स्वयं ही घुटकर मृतप्राय: होने की संभावनाएं प्रबल रूप में स्पष्टतया नजर आने लगेंगीं तब तक देर हो चुकी है ऐसी स्थिति बन चुकी होगी।

बढ़ते तापमान का कृषि पर प्रभाव भी ऐसी परिस्थितियों में से एक जीता-जागता उदाहरण बनकर सामने प्रकट होगा क्योंकि प्राकृतिक पर्यावरण में बढ़ती मानवीय आवश्यकताओं ने औद्योगीकरण, परिवहन, खनन तथा ईंधन हेतु लकडिंयों के प्रयोग ने वनों के विनाश को बढ़ाया है। दक्षिण-पूर्व एशिया के लगभग २०० करोड़ लोग आज भी ईंधन के रूप में लकडी का उपयोग करते हैं जो कि वनों के विनाश का कारण बनता है। विकसित एवं विकासशील देशों में इसकी प्रतिवर्ष वृद्वि वर्तमान समय से तीन गुना जीवाश्म ईंधन से निकलने वाली कार्बन-डाई ऑक्साइड के कारण भी अनेकों प्रकार की समस्यायें उत्पन्न होंगीं।

पहाड़ों बर्फ की चोटियों की बर्फ वर्ष भर पिघलेगी जिससे समुद्र के जल स्तर में वृद्वि होगी जोकि अम्लीय वर्षा का कारण होती है। जलवायु परिवर्तन का सीधा प्रभाव कृषि पर पड़ता है क्योंकि तापमान, आद्रता, वर्षा आदि में बदलाव आएगा जिससे मिट्टी की क्षमता प्रभावित होगी। उत्पादन में तेजी से गिरावट आएगी और अर्थ-व्यवस्था की विकास दर धीमी हो जाएगी। जलवायु परिवर्तन से मौसम की अनियमितता बढ़ेगी फलस्वरूप फसलें लगातार नष्ट होती जाएंगीं।

समस्यायें-

बढ़ता तापमान पृथ्वी के अस्तित्व पर खतरा बनकर खड़ा हो चुका है। विश्व स्तर पर बढ़ती समस्या के लिए अनेक सम्मेलन एवं संगोष्ठियों में बार-बार बताया गया है कि एक डिग्री सें० ग्रे० तापमान बढ़ने से सम्पूर्ण जैव विविधता को किस प्रकार का खतरा उत्पन्न हो रहा है।

एक डिग्री सें० ग्रे० तापमान बढ़ने पर-

१• ५ करोड़ लोगों का जीवन तुरंत प्रभावित हो जाएगा।

२• मलेरिया, कुपोषण और वातावरण से उत्पन्न बीमारियों के कारण प्रतिवर्ष २.५ से ३ प्रतिशत लोगों को जान का खतरा होगा।

३• ऊॅचाई पर रहने वाले लोगों के ठण्ड से मरने वालों की संख्या में वृद्वि होगी।

दो डिग्री सें० ग्रे० तापमान बढ़ने पर–

१• उष्णकटिबंधीय अफ्रीका में फसलों की पैदावार में १० प्रतिशत तक की कमीं।

२• अफ्रीका में मलेरिया प्रभावित लोगों की संख्या १० लाख तक पहुँच सकती है।

३• ध्रुवीय क्षेत्रों की संपूर्ण जैव विविधता का अस्तित्व खतरे में आ जाएगा।

तीन डिग्री सें० ग्रे० तापमान बढ़ने पर–

१• दक्षिण यूरोप में हर साल भयानक सूखे की मार पड़ सकती है।

२• दुनिया में ४ अरब से ज्यादा लोग पानी की किल्लत झेलेंगे।

३• खाद्यान्न उत्पादन में बहुत ज्यादा कमी आ जाएगी।

पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव स्वास्थ्य पर भी संकट के बादल ला सकता है क्योंकि पर्यावरण संकट, स्वास्थ्य जीवन शैली को प्रत्यक्ष तरीके से किसी न किसी रूप से प्रभावित करता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया भर में ४० प्रतिशत बीमारियॉ पर्यावरण के नष्ट होने से होती हैं। राष्ट्रीय मौसम विभाग व मृदा परीक्षण के अनुसार ऑन रिकार्ड वर्ष दर वर्ष गर्म साल की तरफ बढ़ते जा रहे हैं। ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन से पैदा होने वाला वार्मिंग इफेक्ट ज्यादा होता जा रहा हैं। ग्रीनइंड़िया की रिर्पोट के अनुसार देश में वर्ष १९५५ से दिसम्बर २०११ तक करीब ५५ लाख हेक्टेयर खेती की व वन भूमि आवासीय योजना में उपयोग आ चुकी है।

सुझाव–

पर्यावरण संकट इस परिस्थिति की ओर बढ़ता जा रहा है कि अगर आने वाले सालों में सही कदम न उठाये गए तो धरती अपने विनाश की ओर अग्रसर हो सकती है अत: समय की आवश्यकता है सबको मिलकर पहल करने की। भविष्य में हम या तो ऐशियाई धुन्ध के नीचे रहें, गैस चैम्बरों के सदस्य बनें या पर्यावरण की सुरक्षा हेतु विशेष प्रकार के वैज्ञानिक कोट को पहनें या डॉक्टरों की सलाह पर दवाओं का सेवन करें, या फिर हम अभी भी अध्यात्मिक रूप से सचेत हो जाएं अन्यथा चिन्तन-मंथन और विश्व-स्तर पर राजनीतिक संवाद का कोई लाभ नहीं होगा। जलवायु मंथन पर काम कर रही संस्था आई० पी० सी० सी० को २००७ में पुरूस्कार मिलना भी इस क्षेत्र के प्रति हो रही जागरूकता को प्रदर्शित करता है।

आधुनिक जीवन के सतत् विकास के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण प्रदूषण के अध्ययन के संदर्भ में प्रकृति को माँ के रूपमें स्वीकार करना होगा। पर्यावरण से तात्पर्य संपूर्ण विकास वायु-जल तथा भूमि से होता है। प्रगति के नाम पर प्रकृति पर नियंत्रण करने की दृढ़धर्मिता में ढ़ील देते हुए अपने आप को प्रकृति का अंग समझने का प्रयास करना होगा ताकि पारिस्थितिक-तंत्र एवं समाज के बीच परस्पर संतुलन बना रह सके। प्रकृति के भू-जीवीय रासायनिक चक्र को चलाये रखने हेतु जीवीय तथा अजीवीय दोनों प्रकार के घटकों के मध्य क्रियाशीलता के मध्य संतुलन आवश्यक है।

५ जून को प्रतिवर्ष विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर लेग स्टाकहोम, हेलसिंकी, विएना, क्योटो जैसे सम्मेलनों और मॉन्ट्रियल, रियो घोषणापत्र, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम इत्यादि की सहायता से पर्यावरण दिवस का संदेश आधुनिक समाज को देकर समाज से जागरूक रहने का आह्वान् किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों से पर्यावरणीय चेतना बढ़ी है। विकल्पों पर गंभीर चिंतन होने लगा है और अब कहा जाने लगा है कि पर्यावरण को बिना क्षति पहुँचाये या न्यूनतम हानि पहुँचाये टिकाऊ विकास संभव है।

मानव अनादि काल से प्रकृति का सहचर रहा है। प्रकृति का अत्यधिक असंतुलित दोहन समस्त मानवता को काल के गाल में धकेल रहा है। प्रकृति से इस हाथ लो तो दूसरे हाथ उसे वापस करो का शाश्वत् सिद्वांत अब गौर हो गया है। मानव पर्यावरण का एक अभिन्न् अंग है। इसे हमको समझकर सुरक्षित रखना होगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ने (१९८०) में " विश्व २०००'' नामक एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया था, जिसमें कहा था कि " यदि पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित नहीं किया गया तो सन् २०३० तक तेजाबी वर्षा, भुखमरी और महामारी का तांडव नृत्य होगा और मानवता का भविष्य खतरे में पड़ जाएगा।

आज पूरा विश्व प्रदूषण से त्रस्त है, क्योंकि जनसंख्या का बढ़ता दबाब औद्योगिकीकरण की प्रगति इस कारण वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं की संख्या व प्रजातियों में दिन-प्रतिदिन होने वाली कमी ने परितंत्र के असंतुलन को जन्म दिया है। विश्वविख्यात पर्यावरणविद् जेफ गुडेल ने भी चेतावनी दी है कि जलवायु में भारी बदलाव के परिणामस्वरूप इस सदी में ६ अर ब व्यक्ति मारे जाएंगे। एक महान पर्यावरणविद् की इस भविष्यवाणी का मानव जाति को हल्के में नहीं लेना चाहिए। परमात्मा द्वारा मानव को दिया अमूल्य वरदान है पृथ्वी, लेकिन चिरकाल से मानव उसका दोहन कर रहा है।

सन् १९७२ में स्टाक होम (स्वीडन) में संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा आयोजित "मानव पर्यावरण'' अंर्तराष्ट्रीय कॉन्फेन्स में भारत की प्रधानमंत्री स्व० इंदिरा गॉधी जी ने पर्यावरण के संबन्ध में बोलते हुए कहा था- " अधिक जनसंख्या गरीबी को बुलावा देती है और गरीबी प्रदूषण को जन्म देती है।''

सत्यप्रकाश (१९८८) के अनुसार," प्रकृति हमारी देवी है उसके प्रदूषित होने से मन एवं बौद्विक चिंतन भी प्रदूषित होता है। हमें अपने हित की रक्षा के लिए पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए।

अत: प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के संदर्भ में हमें यह बात पूरी तरह समझ लेनी चाहिए कि तत्वों को नष्ट कर पृथ्वी पर रहना कठिन ही नहीं असंभव है क्योंकि हमें सिर्फ अपने लिए ही नहीं अपनी आने वाली पीड़ियों के बारे में भी सोचना है।

आधुनिक जीवन और मौजूदा परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में आज पूरे विश्व में नैतिक पतन दृष्टिगोचर हो रहा है। परिवार, समाज, प्रदेश, देश और अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर सभी व्यक्ति पीड़ित हैं और बिडम्बना यह है कि न तो किसी को इसे रोकने में रूचि है और न ही कोई इस ओर अकेले अथवा मिलकर आवाज उठाते हैं। नैतिक पतन के अनेक कारण हैं। अपने कार्यस्थल पर सही समय पर न पहुँचना, प्रतिदिन का कार्य नियमित दिनचर्या के आधार पर न करना, खाने पीने की वस्तुओं में मिलावट करना, झूठ बोलना, विश्वासघात् करना, अपने लाभ के लिए दूसरों की विवशता का लाभ उठाना, धर्मानुसार आचरण न करना व ब्रह्मचर्य आचरण की अनदेखी करना आदि है। धर्मानुसार अहिंसा की भावना से नैतिक प्रदूषण को भी जब आधुनिक जीवन के सतत् विकास के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण को प्रदूषण से संरक्षित करने का प्रयास करते हुए इस कठिन उपलब्धि को पाने के लिए संघर्षशील होंगे तथा मानव समाज के जीवन मूल्य को संरक्षित किया जा सकेगा तभी ये सभी चीजें एक स्वास्थ्य पर्यावरण का निर्माण करने में सहायता दे सकती हैं।

यदि मानव समाज अभी भी इस ब्रह्मण्ड से अपने अस्तित्व को बचाने हेतु प्रेरित हो सका और सही ढ़ग से आधुनिक जीवन के सतत् विकास को प्रदूषण के प्रकोप से संरक्षित करते हुए आगे बढ़ा तो आने वाला समय अभी भी उसके स्वर्णिम भविष्य की आधारशिला बनेगा अन्यथा वह दिन भी दूर नहीं होगा जब संपूर्ण ब्रह्मण्ड पर्यावरण प्रदूषण के कारण अपना अस्तित्व खो बैठेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१• गोयल, डॉ० एम० के०, पर्यावरण शिक्षण, आर० एस० ए० इन्टरनेशनल, आगरा-२।

२• शर्मा, डॉ० सुमन, सैनी, अलका, पर्यावरण संरक्षण क्यों और कैसे, शोध मंथन, हिन्दी र्जनल पत्रिका दिसम्बर २०१२, मेरठ।

३• जैन, डॉ० के० सी० पर्यावरण शिक्षण, टण्डन पब्लिकेशन बुक मॉर्केट, लुधियाना, १४१००८१।

४• शर्मा, डॉ० ब्रजराज, ओझा, ओमप्रकाश, शर्मा खेमराज, पर्यावरण अध्ययन् शिक्षा (भौतिक एवं जैविक पर्यावरण) अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

५• व्यास, कृष्ण गोपाल, बजट के आइने में निर्मल और अविरल गंगा, इंटरनेट।

६• पाठक, डॉ० अरूणा, पर्यावरण एवं विकास, इंटरनेट।

७• शर्मा, दामोदर, व्यास, हश्चिन्द्र, आधुनिक जीवन और पर्यावरण, पैठछरू ८१. ७३१५.०८२.६ए प्रभात प्रकाशन, २००४ए पृष्ठ रू३६८।

८• गोपाल, डॉ० एम० के०, पर्यावरण शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर,२००८।

९• विद्या मेघ, पर्यावरण संरक्षण हम सबका धर्म, सन् २००९ अगस्त।

१०• सिंह, डॉ० रामपाल, डॉ० रीति, सेवानी, डॉ० अशोक, पर्यावरण मनोविज्ञान अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा-२००९।

११• जिला सांख्यिकीय पत्रिका, मेरठ।

१२• मौसम विभाग, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।

१३• पर्यावरण विभाग, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय परिसर, मेरठ।

14. http://hi.wikipedia,org/s/7q0A